फरीदाबाद
मजदूर समाचार
राहें तलाशने–बनाने के लिए अनुभवों व विचारों के आदान–प्रदान का एक जरिया
नई सीरीज नम्बर 175 जनवरी 2003

एस्बेस्टोस की चद्दरें
बीमारियाँ सालों–साल की
दादा खरीदे
पोते तक भुगतें।

हम क्या-क्या करते हैं....

अपने स्वयं की चर्चायें कम की जाती हैं। खुद की जो बातें की जाती हैं वो भी अक्सर हाँकने- फाँकने वाली होती हैं, स्वयं को इक्कीस और अपने जैसों को उन्नीस दिखाने वाली होती हैं। या फिर, अपने बारे में हम उन बातों को करते हैं जो हमें जीवन में घटनायें लगती हैं — जब- तब हुई अथवा होने वाली बातें। अपने खुद के सामान्य दैनिक जीवन की चर्चायें बहुत- ही कम की जाती हैं। ऐसा क्यों है ?

सहज- सामान्य को ओझल करना और असामान्य को उभारना ऊँच- नीच वाली समाज व्यवस्थाओं के आधार- स्तम्भों में लगता है। घटनायें और घटनाओं की रचना सिर- माथों पर बैठों की जीवनक्रिया है। विगत में भाण्ड- भाट- चारण- कलाकार लोग प्रभुओं के माफिक रंग- रोगन से सामान्य को असामान्य प्रस्तुत करते थे। छुटपुट घटनाओं को महाघटनाओं में बदल कर अमर कृतियों के स्वप्न देखे जाते थे। आज घटना- उद्योग के इर्दगिर्द विभिन्न कोटियों के विशेषज्ञों की कतारें लगी हैं। सिर- माथों वाले पिरामिडों के ताने- बाने का प्रभाव है और यह एक कारण है कि हम स्वयं के बारे में भी घटना- रूपी बातें करते हैं।

बातों के सतही, छिछली होने का कारण ऊँच- नीच वाली समाज व्यवस्था में व्यक्ति की स्थिति गौण होना लगता है। वर्तमान समाज में व्यक्ति इस कदर गौण हो गई है कि व्यक्ति का होना अथवा नहीं होना बराबर जैसा लगने लगा है। खुद को तीसमारखाँ प्रस्तुत करने, दूसरे को उन्नीस दिखाने की महामारी का यह एक कारण लगता है।

और, अपना सामान्य दैनिक जीवन हमें आमतौर पर इतना नीरस लगता है कि इसकी चर्चा स्वयं को ही अरुचिकर लगती है। सुनने वालों के लिये अक्सर "नया कुछ" नहीं होता इन बातों में।

हमें लगता है कि अपने- अपने सामान्य दैनिक जीवन को "अनदेखा करने की आदत" के पार जा कर हम देखना शुरू करेंगे तो बोझिल- उबाऊ- नीरस के दर्शन तो हमें होंगे ही, लेकिन यह ऊँच- नीच के स्तम्भों के रंग- रोगन को भी नोच देगा। तथा, अपने सामान्य दैनिक जीवन की चर्चा और अन्यों के सामान्य दैनिक जीवन की बातें सुनना सिर- माथों से बने स्तम्भों को डगमग कर देंगे।

कपड़े बदलने के क्षणों में भी हमारे मन- मस्तिष्क में अक्सर कितना- कुछ होता है! लेकिन यहाँ हम बहुत- ही खुरदरे ढँग से आरम्भ कर पा रहे हैं। कुछ मित्रों के सामान्य दैनिक जीवन की मोटा- मोटी झलक प्रस्तुत हैं।

★ **19 वर्ष का हूँ।** 1999 से नौकरी कर रहा हूँ। इस समय लखानी शूज में कैजुअल वरकर हूँ। मित्र और मैं 250 रुपये किराये की झुग्गी में रहते हैं। बिजली नहीं है, छापों के डर से बगल वाले देते नहीं, दीये से काम चलाते हैं। ड्युटी जनरल शिफ्ट में है। सुबह साढे पाँच बजे उठता हूँ। बाहर बहुत गन्दगी में टट्टी जाना पड़ता है। फिर पानी की लाइन में लगता हूँ। मित्र भी कैजुअल वरकर है और ब्रेक के बाद इस समय रेहड़ी पर सब्जी बेचता है। वह उठते ही माल लेने सब्जी मण्डी भागता है। पानी भर कर मैं दोनों का खाना बनाता हूँ। स्टोव पर दो की दो टाइम की सब्जी- रोटी बनाने में एक घण्टा लग जाता है। भोजन बनाने के बाद नहाता हूँ और फिर खाना खाता हूँ। साइकिल से 8 बजे ड्युटी के लिये चल पड़ता हूँ। फैक्ट्री गेट पर और फिर डिपार्टमेन्ट में, दो जगह हाजरी लगती है। साढे आठ बजे काम शुरू हो जाता है। चाय के लिये ब्रेक नहीं होता पर साढे नो बजे कैन्टीन से चाय आती है और अपने पैसों से खरीद कर काम करते- करते चाय पीनी पड़ती है। बहुत मेहनत का काम है, हमेशा लगे रहो — तेल लगाना, गिनती कर डिब्बे में पैक करना, गाड़ी में लोड करना। सुपरवाइजर डाँटते, गाली देते रहते हैं। पानी- पेशाब के लिये भी लखानी शूज में समय नहीं देते — छुप कर जाना पड़ता है। लन्च में कुछ राहत। साथ खाते हैं और बातें करते हैं। काम छोड़ने का मन करता है पर कहाँ जायें? सब के मन में विचार उठते रहते हैं। लेट के चक्कर में जिस दिन खाना नहीं बना पाता उस दिन कैन्टीन में खाता हूँ। दाल- चावल ही बनता है और 4 रुपये की आधा प्लेट देते हैं पर उससे पेट नहीं भरता, 8 रुपये के लेने पड़ते हैं। न घर पैसे भेज पा रहा हूँ और न अपना ही ठीक से चलता। लन्च के बाद हमें साढे पाँच घण्टे लगातार काम करना पड़ता है, चाय भी नहीं आती। ऐसे लगता है कि बन्ध गये हैं। मेरा ओवर टाइम नहीं लगता, 5 बजे छूट कर सीधा कमरे पर आता हूँ और चाय बनाता हूँ। चाय पी कर थोड़ी देर इधर- उधर बैठता हूँ। साढे छह बजे पानी भरना, बर्तन धोना। सात बजे बाद खाना बनाता हूँ। मित्र के लौटने पर 9 बजे बाद भोजन करते हैं इसलिये खाना बना कर आसपास बैठता हूँ। कभी- कभार टी. वी. देख लेता हूँ। भोजन बाद बर्तन धोना और फिर साढे दस बजे तक हम सो जाते हैं।

★ **मैं बारहवीं की परीक्षा देने के बाद फैक्ट्री में लग गई थी।** सुबह उठने को मन बिलकुल नहीं करता। माँ और पिताजी 5 बजे उठ कर सब्जी- रोटी बनाने में जुट जाते हैं। बार- बार आवाजें देने के बाद भी मैं सवा छह तक नहीं उठती और माँ की झिकझिक शुरू हो जाती है। कितनी ही अनिच्छा हो, साढे छह बजे तो उठना ही होता है। फिर ड्युटी की तैयारी की भागमभाग शुरू हो जाती है। माँ कुछ- न- कुछ बोलती- बोलती रोटी- सब्जी और चाय देती है। जल्दी- जल्दी खाती- पीती हूँ और टिफिन में रोटी- सब्जी रख कर सवा सात घर से निकल ही पड़ती हूँ। आटो के लिये दस मिनट पैदल चलना पड़ता है। एक आटो में हम दस लड़कियाँ फैक्ट्री जाती हैं। आटो वाला लेट होता है तब बहुत भगाता है और हमें डर लगता है — इन तीन वर्षों में मैंने काफी एक्सीडेन्ट देखे हैं। एक आटो के पलटने से मेरी बहन की सहेली को बहुत चोटें आई थी। आटो में सर्दी बहुत ज्यादा लगती है, गर्मी और बरसात में भी दुर्गत होती है। हमारी ड्युटी सवा आठ बजे से है, हाजरी डिपार्टमेन्ट में लगती है। काम शुरू करने से पहले हमें भूतों वाली वर्दी पहननी पड़ती है। उत्पादन के लिये सुपरवाइजर बहुत डाँटते हैं और भद्दी- गन्दी भाषा इस्तेमाल करते हैं। कई लड़कियाँ तो रो पड़ती हैं। हम लड़कियों से ज्यादा उत्पादन करवा कर फिर लड़कों (**बाकी पेज दो पर**)

... खतों से -पत्रों से...

✱ एक जमाना था जब बड़े कहे जाने वाले
मदिरा के जाम में, लाश की महफिल में तवायफ नचाते थे
अपने सुख के लिये दूसरों को दुख दे कर
झगड़े लगाते थे, युद्ध कराते थे, पान चबाते थे
उस जमाने में गुण्डागिरी बड़ों की विरासत थी
बलात्कार, जोर-जबरदस्ती बड़ों की निशानी थी
बेगारी लेना बड़ों का अधिकार सुरक्षित था
गरीबों को भूखों मरने का पूरा अधिकार था
पुराने जमाने में जो अधिकार बड़े बड़ों को थे
छोटे उसका पालन करने में बड़ों से डरते थे
जब प्रजातन्त्र आया तो अधिकार बँट गये
हर कोई बडा बनना चाहता है, वह ऊपर देखता है
जैसा आचरण ऊपर देखता उसकी नकल करता है
वर्तमान में बड़े छोटे का फर्क मिट रहा है
छोटा भी बड़ों की तरह अपराध करने में जुट रहा है
जिसे कभी बदतर माना जाता था वह अब बड़ा है
इसलिये बदतर सीमा रहित हो कर शान से खड़ा है
बदतर का आदर बढता है सीमा उसकी नहीं रही
धर्मक्षेत्र में, राज क्षेत्र में, अर्थ क्षेत्र में बढती इसकी होत रही
बदतर धर्म क्षेत्र में देखो, बदतर राज्य क्षेत्र में देखो
बदतर अर्थ क्षेत्र में भी है, बदतर सभी तरफ देखो
बदतर का है राज्य, सरसर बदतर बढता जाता है
बदतर की है बड़ी तरक्की, सदाचार को खाता है।

— मुक्तानन्द, देहरादून

✱ .... भारत सरकार को देश की जनता की कोई परवाह नहीं है।... देश की वर्तमान दुर्दशा एवं नेताओं तथा भारत के नागरिकों के चारित्रिक पतन के लिये नेहरू और गाँधी समान रूप से जिम्मेदार हैं। गाँधी का जवाहर शराबी, मांसाहारी (गोमांस भक्षक) और व्यभिचारी था।... आज इस देश में शराब, मांसाहार और व्यभिचार जैसी दुष्प्रवृतियाँ बढने के साथ-साथ भ्रष्टाचार, आतंकवाद, हिंसा आदि भी बढते जा रहे हैं। देश के राष्ट्रपति कलाम जी इस देश को विकसित राष्ट्र बनाना चाहते हैं परन्तु किसी वैज्ञानिक आविष्कार से देश में सुख-शाँती नहीं आ सकती। सुख-शाँती के लिये आवश्यक है : मनुष्य के सोचने का तरीका ठीक किया जाये और उसे सदाचारी बनाया जाये। इसके लिये देश में शराब तथा पशु-पक्षियों की हत्या पर तुरन्त प्रतिबन्ध लगाना आवश्यक है।

—मुराली लाल, अलवर

✱ ... मजदूरों की व्यथा-कथा पढ कर मन दुखी होना स्वाभाविक है, पर रास्ता निकलता नहीं दिख रहा है। फिर भी निराश होने की आवश्यकता नहीं है। रात चाहे जितनी बड़ी हो जाये पर वह चौबीस घण्टे की तो नहीं हो सकती। ....

आम आदमी की व्यथा, समझेंगे क्या खास?
बैठे हैं पंछी मगर, लगा व्याध से आस।।

नष्ट हो गई पीढियाँ, भोग-भोग संत्रास।
नयी कोपलों से अभी, बाकी थोड़ी आस।।

— राजेन्द्र, लखनऊ

✱ .... मन और हृदय कभी-कभी चित्कार उठता है। क्या करूँ? ...मजदूरों की इस तबाही पर अन्य लोग चुप क्यों हैं। कहाँ गई उनकी आवाजें। .... हर तरफ चुप्पी है।... — कलाधर, पूर्णिया

✱ ... हमारे यहाँ छोटा-सा वाचनालय है। काफी सँख्या में शुगर मिल श्रमिक तथा खड्डा व गन्दी बस्ती के जागरूक लोग पढने के लिये आते हैं। श्रमिकों से सम्बन्धित और सामग्री....

—महेश, श्री गंगानगर

✱ तस्वीरे हालात साफ नजर आती हैं
रोते हैं इन्सान, मशीनें गीत गाती हैं।

—अजय, ओखला

✱ हमें मिली है हार जिन्दगी में
हम मौत पर विजय पाना चाहते हैं।

—प्रताब, अजमेर

✱ .... राजधानी .... चपरासी से ले कर प्रधान मन्त्री और राष्ट्रपति तक विराजते हैं। .... भयावह समाचार से सरकार में खलबली क्यों नहीं होती? समस्या का थोड़ा-बहुत निराकरण क्यों नहीं होता है? श्रम मंत्रालय में क्या सब मूक-बधिर ही बैठे हुये हैं?... ग्राम्य जीवन की जो निश्छल, सुन्दर और सहृदयता की तस्वीर थी, वह अब टूट गयी लगती है।

— बाबू लाल, मन्दसौर

✱ ... मैं छतों पर खड़ा हो कर चीख-चीख कर कहना चाहता हूँ कि कारपोरेट मीडिया द्वारा दर्शाई जाती अमरीकावासियों की छवि गलत है। यहाँ कई हजारों में हम हैं जो लालच और दमन के खिलाफ रोज संघर्ष कर रहे हैं। हमें शोषण पर आधारित समाज नहीं चाहिये। हमें परस्पर तालमेल वाला सहयोगी समाज चाहिये। आपस में मिल-बाँट, साँझा करने से अधिक हमें कुछ नहीं चाहिये।... यह सच है कि अमरीका सरकार ने बीस लाख नागरिकों को जेलों में बन्द कर रखा है, किसी भी अन्य देश से ज्यादा कैदी यहाँ हैं। अधिकतर बन्दियों को मानव-स्तर के समर्थन की बेहद जरूरत है ..

— कारागार में बन्द कैसिडी व्हीलर,
ओनटेरियो, अमरीका

तनखा नहीं दी! क्या करें?

•आर.आर. इन्डस्ट्रीज में नवम्बर का वेतन 14 दिसम्बर तक नहीं **•ब्रॉन लैबोरेट्री** में नवम्बर की तनखा 17 दिसम्बर तक नहीं **•कन्डोर पावर प्रोडक्ट्स** प्लॉट 22 सैक्टर-4 में सितम्बर, अक्टूबर और नवम्बर की तनखायें 20 दिसम्बर तक नहीं **•खेमका इस्पात** में नवम्बर का वेतन 17 दिसम्बर तक नहीं **•न्यू एलनबरी इंजिनियरिंग** मेवला महाराजपुर फाटक में नवम्बर की तनखा 13 दिसम्बर तक नहीं **•आटोपिन** इन्डस्ट्रीयल एरिया में अगस्त, सितम्बर, अक्टूबर और नवम्बर की तनखायें 31 दिसम्बर तक नहीं....

37—40 दिन काम करवाने के बाद 30 दिन का वेतन देने का कानून बना कर मजदूरों से जबरन उधार तो लेते ही हैं, सिर—माथों पर बैठे अपने इस कानून का भी पालन नहीं करते। इस सब के खिलाफ मजदूर क्या—क्या कर सकते हैं? इसके बारे में 'मजदूर समाचार' के जरिये भी अपनी बातें कह कर, चर्चाओं को बढायें।

मजदूर समाचार में साझेदारी के लिये:

✱ अपने अनुभव व विचार इसमें छपवा कर चर्चाओं को कुछ और बढवाइये। नाम नहीं बताये जाते और अपनी बातें छपवाने के कोई पैसे नहीं लगते। ✱ बाँटने के लिये सड़क पर खड़ा होना जरूरी नहीं है। दोस्तों को पढवाने के लिये जितनी प्रतियाँ चाहियें उतनी मजदूर लाइब्रेरी से हर महीने 10 तारीख के बाद ले जाइये। ✱ बाँटने वाले फ्री में यह करते हैं। सड़क पर मजदूर समाचार लेते समय इच्छा हो तो बेझिझक पैसे दे सकते हैं। रुपये-पैसे की दिक्कत है।

महीने में एक बार छापते हैं, 5000 प्रतियाँ फ्री बाँटते हैं। मजदूर समाचार में आपको कोई बात गलत लगे तो हमें अवश्य बतायें, अन्यथा भी चर्चाओं के लिए समय निकालें।

हम क्या-क्या करते हैं.... (पेज एक का शेष)

को डाँटते हैं और उन्हें भी उत्पादन बढाने को मजबूर करते हैं। कुछ लड़कियाँ डर से और कुछ लड़कियाँ इनसेन्टिव के लालच में काम में जुटी रहती हैं — कई दिन लन्च भी नहीं करती और घर लौटते समय आटो में रोटी खाती हैं। फैक्ट्री में ज्यादा और जल्दी काम करने के लिये हम पर भारी दबाव रहता है। कम्पनी में बात करना मना है। भारी घुटन होती है और अफसरों को हम खूब गालियाँ-बद्दुआयें देती हैं। हमारे हाथों का बुरा हाल हो जाता है। मेरी उँगलियों में हर रोज पाँच-छह बार तो सूइयाँ घुस ही जाती हैं। कभी-कभी तो बहुत ज्यादा खून निकलता है लेकिन कम्पनी उत्पादन-उत्पादन की रट लगाये रहती है। फैक्ट्री में लन्च के सिवा कोई ब्रेक नहीं होता — न सुबह और न शाम को चाय देते। पानी पीने के लिये भी पूछना पड़ता है, इन्ट्री करनी पड़ती है। हम लड़कियों को रोज आधा घण्टा ओवर टाइम करना पड़ता है — लड़कों का तो और भी बुरा हाल है। रविवार को भी हमें ड्युटी करनी पड़ती है। छुट्टी करने पर डाँटते-फटकारते तो हैं ही महीने में पूर्ण उपस्थिति पर इनाम भी है। घर से सुबह सवा सात बजे की निकली मैं साढे छह बजे घर पहुँचती हूँ। बहुत भूख लगी होती है और घर पहुँचते ही जो भोजन रखा होता है वह खाती हूँ। छोटे भाई पर अक्सर अपनी भड़ास निकालती हूँ। रात का भोजन मुझे बनाना होता है — माँ भी ड्युटी करती है। रात के खाने के बर्तन धोती हूँ और फिर टी.वी.। सोने में 11 बज जाते हैं। (जारी)

अनुभव-विचार

क्लच आटो मजदूर : "आज 14 दिसम्बर हो गया और कम्पनी ने नवम्बर की तनखा देनी शुरू भी नहीं की है। लीडर कह रहे थे कि आज तनखा दिलवा देंगे और कम्पनी नहीं मानी तो वे ओवर टाइम बन्द करवा देंगे, कैजुअलों को रोक देंगे.... लीडरों को क्या पड़ी हमें तनखा दिलवाने की? हमारे लिये वे मैनेजमेन्ट से क्यों लड़ेंगे? उनको तो ऐसी ही बातें करने के लिये घूमने को गाड़ी मिलती है। लीडरों को कैन्टीन में फ्री खाने-पीने और बेरोकटोक फैक्ट्री के अन्दर आने, बाहर जाने की छूट रहती है। इसलिये अपनी तनखा के लिये हमें ही प्रयास करने होंगे। लेकिन समझ में नहीं आता कि क्या करें?"

स्काइटोन केबल्स वरकर : "28 अगस्त को कम्पनी ने गुण्डागर्दी कर जानबूझ कर पँगा लिया था। अगस्त की तनखा दिये बिना हमें फैक्ट्री से बाहर किया। श्रम विभाग और प्रशासन के विभिन्न स्तरों पर हम ने दस्तक दी। विभिन्न संगठनों से भी हम मिले। बयानों की कमी नहीं रही। लेकिन समय बीतते जाने के साथ हम कमजोर पड़ने लगे। फिर भी कम्पनी के अन्दाज से ज्यादा मजबूती हम ने दिखाई और कम्पनी को कुछ झुकना पड़ा। हम में से 9 निलम्बित को ड्युटी पर लेने और 11 डिसमिस कियों को निलम्बित में बदलने का समझौता हुआ है। हम घायल हुये हैं और हमें सबसे भारी चोट डेढ-दो-तीन साल से लगातार काम कर रहे और कम्पनी द्वारा कैजुअल कहे जाते 150 वरकरों को ड्युटी पर नहीं लिया जाना है — सिर्फ परमानेन्ट कहे जाने वाले 80 वरकर ड्युटी पर लिये गये हैं। कम्पनी ने ठेकेदारों के जरिये 150-175 वरकर भर्ती किये हैं। कम्पनी ने 3 की जगह 12-12 घण्टे की 2 शिफ्ट कर दी हैं। साढे तीन महीने उत्पादन बन्द रहने के कारण उत्पादन की कम्पनी को सख्त जरूरत है इसलिये पुचकार कर काम ले रही है।"

कानून-कानून

सुभाष पाइप मजदूर: "डबुआ-पाली रोड़ स्थित फैक्ट्री में कम्पनी 1200-1500-1700 रुपये महीना तनखा देती है। हम ने हरियाणा सरकार द्वारा निर्धारित न्यूनतम वेतन माँगा तो हम में से कम्पनी ने 27 का गेट रोक दिया। हम ने श्रम विभाग में शिकायत की है।"

खण्डेलवाल प्रा.लि. वरकर: "प्लॉट 68 सैक्टर-6 स्थित फैक्ट्री में हैल्परों को 1200 रुपये तनखा देते हैं। ऑपरेटरों को भर्ती के समय 4000 तनखा बताते हैं पर देते 1500-1600 रुपये महीना हैं। ई.एस. आई. कार्ड नहीं देते। नवम्बर का वेतन 20 दिसम्बर तक नहीं दिया है।"

ग्रेविटास मजदूर: "प्लॉट 61 सैक्टर-59 स्थित फैक्ट्री में हम जी. ई. मोटर्स के लिये मोटर वाइंडिंग करते हैं। ठेकेदारों के जरिये रखों को 1000-1200 और कैजुअलों को 1500 रुपये महीना तनखा देते हैं। भर्ती के समय कोरे कागजों पर हस्ताक्षर करवाते हैं। ई.एस.आई. के फार्म भरे हैं, वेतन में से पैसे काटते हैं लेकिन ई.एस.आई. कार्ड नहीं दिये हैं। नवम्बर का वेतन आज 13 दिसम्बर तक नहीं दिया है।"

श्याम अलॉय स्टील मजदूर : "300 में मात्र 35 परमानेन्ट हैं। ठेकेदारों के जरिये रखे वरकरों को 39 से 60 रुपये दिहाड़ी देते हैं और रविवार को भी ड्युटी जरूरी है। बरसों से लगातार काम करते वरकर कैजुअल हैं, ई.एस.आई. कार्ड नहीं और प्रोविडेन्ट फण्ड नहीं। एक्सीडेन्ट बहुत होते हैं। कम्पनी कुछ दिन इलाज करवाती है और ज्यादा चोट वालों को फिर निकाल देती है।"

इण्डिया फोर्ज वरकर : "प्लॉट 28 सैक्टर-6 स्थित फैक्ट्री में 400 में से 4-5 परमानेन्ट हैं और बाकी सब ठेकेदारों के जरिये रखे गये वरकर हैं। हैल्परों को 1000 रुपये और ऑपरेटरों को 1200-1500 रुपये महीना तनखा देते हैं। ओवर टाइम सिंगल रेट से। गुण्डे फैक्ट्री में ला कर ठेकेदार हम मजदूरों को धमकाते हैं।"

खप्पर भरता नहीं

कैनन इण्डिया मजदूर: "प्लॉट 79 सैक्टर-25 स्थित फैक्ट्री में जनरल मैनेजर समूहों में हमें बुला कर कहता है कि तनावमुक्त और प्रसन्नचित्त रहो। सम्राट सिकन्दर और साधु की कहानी सुना कर साहब कहता है कि हमें साधु के समान सन्तोष करना चाहिये तथा कुछ नहीं माँगना चाहिये। कम्पनी ने वार्षिक वेतन वृद्धि को दो वर्ष में एक बार कर दिया है। कुल वेतन के 10 प्रतिशत की वृद्धि की जगह बेसिक के 4 प्रतिशत की वृद्धि कर दी है। इस बार यह भी कह दिया है कि आगे से किसी भी प्रकार की वेतन वृद्धि को भूल जाओ। बोनस 20 प्रतिशत से घटा कर 8.33 कर दिया है और बोनस पर मनमर्जी के कानून अलग से लाद दिये हैं। दिवाली पर उपहारस्वरूप दिये जाने वाले बेसिक के दस प्रतिशत रुपये इस बार नहीं दिये। दिवाली पर हम मजदूरों को मिठाई का डिब्बा तक नहीं दिया लेकिन मुख्यमंत्री को दस हजार रुपये की मिठाई भिजवाई। ड्युटी के समय से पाँच मिनट पहले फैक्ट्री के अन्दर नहीं जाओ तो गेट पर रोकते हैं और परसनल मैनेजर सवालों की झड़ी लगा देता है। लन्च के आधे घण्टे को कम्पनी सिकोड़ कर 20 मिनट करती है। ठेकेदारों के जरिये रखे 200 वरकरों से 11 घण्टे रोज की ड्युटी ली जाती है और बदले में 2000 रुपये महीना देते हैं। इधर 26 दिसम्बर को परमानेन्ट मजदूरों को नये सिरे से ई.एस.आई. तथा पी.एफ. के फार्म भरने को कम्पनी ने कहा। इनकार पर जनरल मैनेजर ने 28 दिसम्बर को अलग-अलग विभाग से 'अपने' 40-50 मजदूरों की मीटिंग ली। साहब ने पुचकारा और धमकाया तथा कहा कि सीधे टाइम आफिस जाओ और फार्म भरो। एक भी टाइम आफिस नहीं गया!"

कटलर हैमर वरकर: "मथुरा रोड़ स्थित फैक्ट्री में दस साल से हम मजदूरों की भारी बलि लेने का अनन्त सिलसिला जारी है। यूनियन-मैनजमेन्ट एग्रीमेन्ट द्वारा 1995 में वर्क लोड में तीव्र वृद्धि की गई। फिर 1996 में वी.आर. एस. लगा कर कम्पनी ने वरकरों और स्टाफ में से 250 की छँटनी की। मजदूर कम करने के बाद भी उत्पादन कम नहीं किया बल्कि इसके उलट 1997 में एग्रीमेन्ट अनुसार देय राशि से भी कम्पनी मुकर गई। अत्याधिक परेशानी से छुटकारे के लिये हम ने 1998 में नेता बदले। लेकिन हमें कोई राहत नहीं मिली। कम्पनी ने सन् 2000 में फिर वी.आर.एस. लगाई और फिर 250 की छँटनी की। मजदूर कम करते रहना और उत्पादन पूर्ववत रखना तथा देय राशि भी नहीं देना! ऐसे में पुराने लीडरों ने हमारे असन्तोष को हवा दे कर हड़ताल करवा दी और नये लीडर उत्पादन में जुटे। कम्पनी के पुराने और नये पट्ठों की जुगलबन्दी में हम बुरे फँसे थे परन्तु टेकमसेह कम्पनी की तालाबन्दी से सचेत हो कर हम अपनी-अपनी मशीनों पर पहुँच गये। कम्पनी ने पुराने पट्ठों को मालामाल कर विदा किया और नये पट्ठे हमारे छाती पर मूँग दलने लगे। दहशत के साये में कम्पनी ने झटके से वर्क लोड दुगना कर दिया — बिना किसी ओवर टाइम भुगतान के, शिफ्ट खत्म होने के बाद रुक कर नया निर्धारित उत्पादन देने के लिये हम मजबूर किये गये। कम उत्पादन के नाम पर वेतन में कटौतियाँ की गई। 1995 में 765 परमानेन्ट और 150 कैजुअल वरकरों के लिये एग्रीमेन्ट द्वारा उत्पादन की जो भारी मात्रा निर्धारित की गई थी उससे दुगना उत्पादन अब कटलर हैमर में बचे हम 367 परमानेन्ट मजदूरों से कम्पनी माँगती और लेती है। हाँ, तीन ठेकेदारों के जरिये 100-125 वरकर और 6 महीने बाद ब्रेक वाले 175 ट्रेनियों को भी रख रहे हैं। अपने-अपने ढँग से और आपसी तालमेलों द्वारा हम ने पलटवार किये हैं और साँस लेने के अवसर जुटाये हैं पर उनकी चर्चा यहाँ नहीं करेंगे। लेकिन तत्काल नतीजे देखने के चक्कर में हम फिर नेता-छल के शिकार हुये। चन्दे दिये, समय दिया और सीधे भिड़ने के लिये हम कमर कस ही रहे थे कि कम्पनी ने हमारे 5 नेताओं को गिरफ्तार करवा कर हमें भड़का दिया। अचानक 5.10.2001 को हड़ताल कर कम्पनी के बिछाये जाल में हम फँस गये। काफी नुकसान उठा कर और कुछ नेताओं को किनारे कर 10.1.2002 को हम फिर मशीनों पर पहुँचे। लेकिन एक तरफ कम्पनी अपने पट्ठों को हमारे नेता कहना जारी रखे है और दूसरी तरफ हम में से कई का नेताओं से मन नहीं भरा है। चमत्कार की आस में हम ने फिर नेता चुने हैं और कम्पनी को लम्बा-चौड़ा डिमाण्ड नोटिस दिया है।"

अनुकरणीय

गवर्नमेन्ट प्रेस वरकर : "पुरानी वाली प्रेस में बड़ी कैन्टीन है। यह कैन्टीन ठेकेदार के जरिये चलवाई जाती थी। कैन्टीन वरकर ठेकेदार के वरकर कहलाते थे। हम परमानेन्ट वरकरों ने पहल की और लड़-झगड़ कर, काफी मुश्किलों का सामना कर दस साल पहले ठेकेदारी खत्म करवाई। कैन्टीन वरकर अब गवर्नमेन्ट प्रेस के वरकर हैं, सरकारी कर्मचारी हैं। क्लास फोर के अन्य मजदूरों के समान कैन्टीन वरकरों का वेतन चार-साढे चार हजार रुपये महीना है। 'लाभ नहीं – हानि नहीं' के आधार पर गवर्नमेन्ट प्रेस कैन्टीन में एक रुपये में चाय-समोसा और डेढ रुपये में थाली (5 रोटी, सब्जी) हैं।"

दुर्गत अभियान

राजकीय विद्यालय अध्यापक : "केन्द्र और राज्य सरकारों ने बच्चों व अध्यापकों पर आजकल कुछ ज्यादा ही निशाने साधे हुये हैं। राष्ट्रीय शैक्षणिक अनुसन्धान एवं प्रशिक्षण परिषद और प्रान्त की ऐसी ही परिषद ने मिल कर हम अध्यापकों की सर्दियों की छुट्टियाँ भी बर्बाद कर दी। 'सर्व शिक्षा अभियान' के नाम पर 23 से 29 दिसम्बर तक प्रतिदिन सुबह 9 से साँय साढे तीन बजे तक विशेष शिविरों में सरकार ने हमारी उपस्थिति अनिवार्य घोषित की। क्रिसमस के दिन, 25 दिसम्बर को भी हम शिविरों में उबकाई लेने को मजबूर किये गये। एक शिविर में 500-600 अध्यापक रखे गये और जगह-जगह शिविर इस प्रकार लगाये गये कि कार्यस्थल से 8 किलोमीटर के दायरे में रहें ताकि नियमानुसार टीए-डीए भी अध्यापकों को नहीं देना पड़े। ठण्ड और धुन्ध में भारी अतिरिक्त परेशानी के बदले हमें प्रतिदिन मात्र दो कप चाय दी गई। हम में से परिषदों द्वारा प्रशिक्षित लोग '6 से 14 वर्ष के सब बच्चे स्कूल जायें; बच्चे बीच में ही पढाई नहीं छोड़ें; स्तर की शिक्षा दें...' वाली अनन्त बार सुनी-सुनाई बातें दोहराते रहे। हम मन मारे कैदी बने रहे क्योंकि छापों और अनुपस्थित पाये जाने पर सख्त सजा की तलवारें सरकार ने तान रखी थी।

"मनहूसता को छितराने के लिये हम लोगों ने हँसी-मजाक और रागनियों का सहारा लिया। प्रशिक्षक भी अपने पाठ भूल कर अक्सर रागनियों के रँग में डूबे। भड़ास भी हम ने अनेकों तरीकों से निकाली। एक जिला शिक्षा अधिकारी के दौरे-छापे के वक्त एक शिविर में अध्यापक बैठे ही रहे, खड़े नहीं हुये। साहब ने स्वयं को बहुत अपमानित महसूस किया और खीझ को बत्तीसी से ढँापने की नाकाम कोशिश करते हुये बोला, 'मेरे आने पर खड़े नहीं हुये; कोई बात नहीं; मैं तो आप में से ही हूँ। लेकिन बड़े साहबों के आने पर कृपया खड़े हो जाना, मेरी बेइज्जती मत करवा देना।'

"शिविरों में यह चर्चा आम रही कि सीखना-सिखाना फर्जी है। यह तो विश्व बैंक की योजना है। वर्ल्ड बैंक ज्यादा से ज्यादा बच्चों को मण्डी की जरूरतों की पूर्ति के लिये स्कूली चक्की में पीसना चाहता है। हल्के-फुल्के क्षणों में इन शिविरों को विश्व बैंक के पैसे ठिकाने लगाना भी कहा गया।"

जुलाई में देय महँगाई भत्ते के आँकड़े साल खत्म होने पर श्रम विभाग में पहुँचे हैं। डी.ए. के 3 पॉइन्ट, वेतन में 6 रुपये 93 पैसे की वृद्धि! 1.7.2002 से न्यूनतम वेतन : अकुशल मजदूर 2140 रुपये 9 पैसे महीने के (8 घण्टे प्रतिदिन ड्युटी और हफ्ते में एक दिन छुट्टी); अर्ध-कुशल मजदूर 2250 रुपये 9 पैसे; कुशल मजदूर 2400 रुपये 9 पैसे; उच्च कुशल मजदूर 2700 रुपये 9 पैसे।

मेरठ से–

* हम लोग **सारु स्मेल्टिंग मिल्स** में काम करते हैं। अकारण ही फैक्ट्री के 18 कर्मचारियों को निकाल दिया गया। हमारी सारी कोशिशें बेकार गई – फैक्ट्री को बहुत कम रेट पर सेवायें देने वाले वरकर मिल गये हैं। अक्टूबर से दिसम्बर-आरम्भ तक का हमारा संघर्ष व्यर्थ गया, न्याय नहीं मिला। अब हम सभी लोगों ने अपने परिवारों के साथ कम्पनी के गेट पर आमरण अनशन करने का फैसला किया है।

* **मार्शल सेक्युरिटी एण्ड डिटेक्टिव सर्विस** के छल से हम जख्मी हुये हैं। कम्पनी अपने विज्ञापनों, पैम्फलेटों व पत्रों में घोषणा करती है कि उसका ट्रेनिंग सेन्टर मानव संसाधन एवं विकास मंत्रालय के उपक्रम नेशनल ओपन स्कूल, नई दिल्ली से मान्यता प्राप्त है। हर प्रशिक्षित के लिये रोजगार की 100 प्रतिशत गारन्टी बताते हैं। फीस, वर्दी आदि के नाम पर हम लोगों से 1400-1400 रुपये लिये गये। ट्रेनिंग के बाद दसियों दिन ऑफिस का चक्कर काटना पड़ा। हमें गार्ड के रूप में 1500 रुपये मासिक पर 12 घण्टे प्रतिदिन की ड्युटी के लिये अलग-अलग फैक्ट्रियों-फर्मों में तैनात किया गया। उन प्रतिष्ठानों से हुये कान्ट्रैक्ट के अनुसार एक गार्ड के 5500 रुपये वेतन तय थे।

गार्ड ड्युटी के दौरान कम्पनी वाले निजी काम (झाड़ू, बूट पॉलिश, गाड़ी पोंछना) कराने लगे। जब बात कपड़े साफ कराने तक आई तो हम ने काम छोड़ दिया। मैंने 18 दिन और मेरे मित्रों ने 19-19 दिन ड्युटी दी थी। 'मार्शल' ने 20-30 दिन की पेमेन्ट वहाँ से ले ली मगर हमें यह कह कर टाल दिया कि हम ने महीना पूरा नही किया और बिना महीना पूरा किये वेतन पास नहीं होता। 'मार्शल' के अनुसार हमारा चरित्र ठीक सिद्ध नहीं हुआ लिहाजा अब वह हमें कहीं नियुक्त नहीं करेगी। ट्रेनिंग में समय-श्रम-अर्थ तो नष्ट हुये ही, किये काम के पैसे भी मार्शल सेक्युरिटी ने नहीं दिये।

* **हम प्रेस वाले:** हम बड़े अखबार के छोटे मजदूर हैं। बिना किसी अतिरिक्त योग्यता के भर्ती होने वाले मजदूर। अब जो भी प्रवेश पा रहे हैं सोर्स-पैरवी, राजनैतिक अप्रोच, 'जाति' विषयक योग्यता एवं रिश्वत रूपी अतिरिक्त योग्यता के बल पर। पत्रकारों-सम्पादकों का चयन भी इसी सच के तहत होता है। लेखकों की रचनाओं की स्वीकृति; उनके पारिश्रमिक के निर्धारण में भी जुगाड़ कल्चर, कमीशनखोरी हावी हैं। चूँकि हम पुराने हैं, इन सच्चाइयों से अलग हैं; इसलिये हमारे ऊपर तलवार की धार हमेशा पड़ती है। कब-क्या हो जाये; कुछ नहीं कहा जा सकता।

क्या नहीं करते हम! घर के काम, शरीरों की मालिश, कपड़ा धोना, सब कुछ। यह अतिरिक्त ड्युटी है। बड़े साहब को शराब ला कर देने में तनिक चूक हुई; अपने लोगों में से भी किसी को खबर हुई; पिटाई भी होती है। हक की बात बेकार है। नौकरी जायेगी, भूखों मरना पड़ेगा। शोषण हमारा सच है। किसी भी कीमत पर शोषित होते रहना हमारी किस्मत है। हाँ, हमारे चेहरे पर यह प्रभावी चेहरा जरूर है कि, 'हम प्रेस वाले हैं।'

* **शब्दों से खेलने-घड़ियाली आँसू बहाने:** "लीजिये भाई, पढिये। हमें आपकी खबर चाहिये।" नैल्को स्पोर्ट्स इन्डस्ट्री, दिल्ली रोड के गेट पर रिक्शे से उतरने के बाद अखबार बाँटती हुई मैंने मजदूरों से कहा।

"प्लीज, आप जाइये। पिछला अंक पढ कर हम ने विमर्श किया था। सब बकवास है।"

"लेकिन भाई, ऐसी भी क्या बात है? कुछ कहो – मैं भी तो सुनूँ।"

"हम से बात करें। मेरे बारे में लिखें। 'राष्ट्रभाषा' हिन्दी में पी एच.डी. हूँ।", जिस रिक्शे से मैं उतरी थी उसका चालक पास आ कर बोला।

मैंने उसे मजदूर समाचार दिया। अखबार लेते ही वह पीछे मुड़ गया।

"क्यों, दो मिनट तो दो।" मैंने अनुरोध किया।

वह बोला, "देख रही हैं, सवारी मिल गई। आप शब्दों से खेलेंगी। इस और दूसरे अखबार-पत्रिका में भी घड़ियाली आँसू बहायेंगी। हमारे दुख-दर्द का मजाक बनाने, उसे बेच कर खाने का काम करेंगी। आपके ऐश-आराम में वृद्धि होगी! हमें **रोटी** नहीं मिलेगी। हमें तो वही करने से कुछ मिलेगा जो मैं कर रहा हूँ।" – वह सवारी ले कर चला गया। बाकी लोग हँसने लगे।

मजदूरों ने बताया कि 'मजदूर समाचार' के नवम्बर अंक में हमारी बिरादरी की जो व्यथा-कथा पढने को मिली, उससे भी बदतर है हमारी दशा। हमारे लीडर भी कहते हैं कि हम आपके चक्कर में न पड़ें। जिन अखबारों का प्रभुत्व होता है, जिनकी कुछ हद तक सुनी जाती है वे हमारे बारे में कुछ नहीं छापते। वे वही छापते हैं जो बड़े लोग चाहते हैं – बिरादरीवाद का मामला है। मजदूर समाचार में कुछ छप भी गया तो नक्कारखाने में तूती की आवाज होगी। फायदा कुछ होना नहीं..... –नीलम

डाक पता : मजदूर लाईब्रेरी, आटोपिन झुग्गी, फरीदाबाद –121001

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक एवं सम्पादक शेर सिंह के लिए जे० के० आफसैट दिल्ली से मुद्रित किया। **RN 42233** पोस्टल रजिस्ट्रेशन **L/HR/FBD/73**
सौरभ लेजर टाइपसैटर्स, बी–546 नेहरु ग्राउंड, फरीदाबाद द्वारा टाइपसैट।